# REPORTING OF PEACE CENTRE, BHAGALPUR

## OCTOBER 2024

For Individual Event

❖ Date: 2 **October 2024**

Time: 4pm- 6pm

Location **:** स्टेशन चौक भागलपुर**,** गोराडीह के हज्जुडीह, तरछा, सियारगढ, मोहनपुर, कहलगैयां और बदालीचक, **कहलगाँव, नवगछिया, भागलपुर**

Name of Event/Activity : गाँधी जयंती

Type of Activity : जयंती , संवाद

Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

2 अक्टूबर 2024 को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के अवसर पर पीस सेंटर परिधि, जनप्रिय और कलाकेंद्र द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन स्टेशन चौक भागलपुर में किया गया। गांधी जयंती को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में परिधि द्वारा गांव और परिधि कार्यालय भीखनपुर में गांधी की तस्वीर पर पुष्पांजलि कर आज के कार्यक्रम की शुरुआत की गयी। वहीं बच्चों के साथ गोराडीह के हज्जुडीह , तरछा, सियारगढ , मोहनपुर , कहलगैयां और बदालीचक में गाँधी जयंती मनाया। कहलगांव और नवगछिया प्रखंड में भी मछुआरा समुदाय के बीचगाँधी जयंती के माध्यम से गाँधी के विचारों पर चर्चा की | भागलपुर स्टेशन पर पीस सेंटर परिधि और जनप्रिय द्वारा गीत संगीत और वक्तव्य का आयोजन हुआ। वहीं कलाकेंद्र के छात्र छात्राओं ने रंगोली के माध्यम से गांधी जी की जमीन पर तस्वीर बनाई। इसे बनाने में कृषिका गुप्ता, मृदुला सिंह, सौरभ कुमार पासवान आदि ने सम्मिलित तौर पर बनाया। परिधि के निदेशक उदय ने कहा कि आज जब चारों ओर हाहाकार , नफरत और हिंसा फैल रही है ऐसे में गांधी के विचार और भी प्रासंगिक हो गए हैं। मनुष्य सभ्यता की सबसे महत्वपूर्ण निर्मिति प्रेम है। जिसे जाति नस्ल , संप्रदाय और अन्य प्रकार की विभेदकारी व्यवस्था ध्वस्त करने पर आमदा है। गांधी जी आज के विकास को शैतानी सभ्यता कहते थे। यह शैतानी सभ्यता प्रकृति , व्यक्ति और समुदाय की लूट पर टिकी है। वर्तमान विकास के अंदर हिंसा छिपी है। विकास का शैतानी और विध्वंसक चेहरा बराज के ऊपर पानी चढ़ने और बाढ़ की विभीषिका के रूप में देख रहे हैं। इस विकास ने विषमता बढ़ा दी है। विषमता विकास का हिंसक चेहरा है। गांधी के विचार को आज गांव गांव तक पहुंचाने की जरूरत है। पीस सेंटर परिधि के संयोजक राहुल ने कहा कि गांधी के अहिंसा क्रांति की ही देन है कि आज सौ से ज्यादा देशों में गांधी की प्रतिमा स्थापित की गई है। गांधी ने पूरी दुनिया को सत्याग्रह और अहिंसा का ऐसा औजार दिया जिसने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन लाने में अहम भूमिका निभाई। मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला जैसी महान शख्सियतों के गांधी हीरो और आइंस्टिन के आदर्श थे। मौके पर गौतम कुमार ने कहा - गांधी ने पूरी दुनिया को नई राह दिखलाई है, शांति और प्रेम की राह ही सबसे अधिक खूबसूरत और टिकाऊ होता है। युद्ध और हिंसा कभी समाधान हो ही नहीं सकता। इकराम हुसैन साद और जनप्रिय के बच्चों ने शांति और प्रेम के गीत गाए। सुषमा कृतिका और सुरभि ने " धरा गगन में हो खुशी दीनता नहीं, कैसे मिलकर हम रहें सोचा यही" गीत गाकर प्रेम का संदेश दिया। अर्णव कुमार ने गाँधी बनकर सन्देश दिया।

Theme: अहिंसा और सद्भाव

Rationale: देश में घृणा के वातावरण को कम करना

Resource Person/s : उदय, राहुल, जयनारायण, सुषमा, लाडली राज

Total number of participants (in that activity) : 500

❖ Date **: 09 October 2024**

Time: 7pm -9pm

Location: दुर्गा बाड़ी, मसाकचक भागलपुर

Name of Event/Activity: "नाटक व माइम की प्रस्तुति"

Type of Activity : सांस्कृतिक कार्यक्रम

Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

दिनांक 9 अक्टूबर 2024 को परिधि द्वारा दुर्गाबाड़ी मसाकचक भागलपुर में नाटक और माइम की प्रस्तुति की गई। महिला मुद्दों पर केंद्रित नाटक और माइम का निर्माण परिधि महिला मंडली द्वारा किया गया। नाटक "घर-घर सड़क-सड़क " में महिलाओं के साथ जन्म से मृत्यु तक होने वाले भेदभाव को दिखलाया गया। संवाद:- सीधी तन कर चलती क्यों.? जोर जोर से हंसती क्यों? के माध्यम से पुरुषवादी मानसिकता को उजागर किया गया। नाटक में एक व्यक्ति कहता है- तुम पायलट हो या डॉक्टर, पर हो तो एक औरत ही.."। समाज ने औरत को कमजोर, अबला और निःसहाय बनाकर रखा है, समाज में कोई सशक्त नारी बर्दाश्त नहीं की जाती।

दुनियां की सबसे बड़ी विषमता की जननी है पितृसत्ता। महिलाएं घर सड़क , कार्यालय सभी जगह भेद भाव और हिंसा की शिकार होती हैं ये नाटक का केंद्रीय विषय है। केवल महिलाओं के सशक्तिकरण से व्यवस्था नहीं बदलेगी , लडकों को संवेदित करना जरूरी है। घर घर,सड़क सड़क नाटक में औरतों के इर्द-गिर्द होने वाली घटनाओं और पुरुषवादी सोच को छोटी-छोटी कहानियों के रूप में सजाया है। सुश्री संगीता द्वारा रचित व निर्देशित यह नाटक छोटी-छोटी कहानियों का कोलाज है जिसे सुषमा, लाडली राज,स्मिता कुमारी,श्रृति सुरभि और कृतिका मंजरी ने अपने अभिनय से जीवंत किया। स्त्री हो या पुरुष सभी किरदार महिलाओं ने ही निभाया। दूसरी प्रस्तुति माइम "-देवी " की हुई। देवी -जो जननी है, देवी -जो भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती है, देवी -जो अर्धांगिनी है, देवी - जो बेटी बन खुशियाँ बिखेरती है... पर समाज इन देवियों के साथ क्या करता है..? इन्हें मूर्ति की तरह चुप रहने कहता है। अब औरत पूजा नहीं बराबरी चाहती है। सामूहिक रचना और राहुल के निर्देशन में तैयार माइम महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा पर केंद्रित था। गर्भ में ही भ्रूण हत्या, जन्म के बाद भेद भाव, स्कूल - कॉलेज में छेड़ छाड़, मानसिक प्रताड़ना, एसिड अटैक, घरेलू हिंसा आदि विषयों को मृदुला सिंह, कुमारी नीलांजना, कृषिका गुप्ता, आकांक्षा राय, सौरभ, तमन्ना राठौर ने अपने अभिनय और ध्वनि प्रभाव द्वारा प्रस्तुत किया गया।

## पुरुष सत्तात्मक व्यवस्था पर नाटक घर-घर सड़क-सड़क ने किया चोट

**भागलपुर (एसएनबी)।** परिधि द्वारा दुर्गाबाड़ी मशाकचक भागलपुर में नाटक और माइम की प्रस्तुति की गई। महिला मुद्दों पर केंद्रित नाटक और माइम का निर्माण परिधि महिला मंडली द्वारा किया गया। नाटक घर-घर सड़क-सड़क में महिलाओं के साथ जन्म से मृत्यु तक होने वाले भेदभाव को दिखलाया गया। संवादरू- सीधी तन कर चलती क्यों? जोर जोर से हंसती क्यों? के माध्यम से पुरुषवादी मानसिकता को उजागर किया गया।

नाटक प्रस्तुत करते कलाकार।

नाटक में एक व्यक्ति कहता है तुम पायलट हो या डॉक्टर, पर हो तो एक औरत ही। समाज ने औरत को कमजोर, अबला और निःसहाय बनाकर रखा है, समाज में कोई सशक्त नारी बर्दाश्त नहीं की जाती। दुनियां की सबसे बड़ी विषमता की जननी है पितृसत्ता। महिलाएं घर सड़क, कार्यालय सभी जगह भेद भाव और हिंसा की शिकार होती है ये नाटक का केंद्रीय विषय है। केवल महिलाओं के सशक्तिकरण से व्यवस्था नही बदलेगी, लडकों को संवेदित करना जरूरी है।

घर घर,सड़क सड़क नाटक में औरतों के इर्द-गिर्द होने वाली घटनाओं और पुरुषवादी सोच को छोटी-छोटी कहानियों के रूप में सजाया है। सुश्री संगीता द्वारा रचित व निर्देशित यह नाटक छोटी-छोटी कहानियों का कोलाज है जिसे सुषमा, लाडली राज, स्मिता कुमारी, श्रृति सुरभि और कृतिका मंजरी ने अपने अभिनय से जीवंत किया। स्त्री हो या पुरुष सभी किरदार महिलाओं ने ही निभाया। दूसरी प्रस्तुति माइम देवी की हुई। देवी -जो जननी है, देवी - जो भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती है, देवी जो अर्धांगिनी है, देवी जो बेटी बन खुशियाँ बिखेरती है पर समाज इन देवियों के साथ क्या करता है ? इन्हें मूर्ति की तरह चुप रहने कहता है। अब औरत पूजा नही बराबरी चाहती है। सामूहिक रचना और राहुल के निर्देशन में तैयार माइम महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा पर केंद्रित था। गर्भ में ही भ्रूण हत्या, जन्म के बाद भेद भाव, स्कूल कॉलेज में छेड़ छाड़, मानसिक प्रताड़ना, एसिड अटैक, घरेलू हिंसा आदि विषयों को मृदुला सिंह, कुमारी नीलांजना, कृषिका गुप्ता, आकांक्षा राय, सौरभ, तमन्ना राठौर ने अपने अभिनय और ध्वनि प्रभाव द्वारा प्रस्तुत किया गया। माइम की प्रस्तुति देखकर कुछ समय का सन्नाटा पसर गया। इस अवसर पर दुर्गाबाड़ी पंडाल पूरी तरह भरा हुआ था।

Theme: महिला हिंसा

Rationale:

Resource Person/s :- संगीता , राहुल

Total number of participants (in that activity) : 300

प्रभात खबर, 10/10/24

## नाटक का मंचन कर कलाकारों ने महिलाओं के साथ भेदभाव पर किया चोट

**भागलपुर** .दुर्गाबाड़ी परिसर में षष्ठी पूजा पर सांस्कृतिक आयोजन का शुभारंभ हुआ. पहले दिन फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ. परिधि की ओर से घर-घर, सड़क-सड़क नाटक का मंचन किया गया. कलाकारों ने इस नाटक में महिलाओं के साथ होने वाले भेदभाव पर चोट किया. महिलाओं के साथ जन्म से मृत्यु तक होने वाले भेदभाव को दिखलाया गया. नाटक में संवाद सीधी तन कर चलती क्यों हो और जोर जोर से हंसती क्यों हो ने दर्शकों को तालियां बजाने को विवश कर दिया. नाटक में बताया कि केवल महिलाओं के सशक्तिकरण से व्यवस्था नहीं बदलेगी, लडकों को संवेदित करना जरूरी है. सामूहिक रचना और राहुल के निर्देशन में तैयार माइम महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा पर केंद्रित था. गर्भ में ही भ्रूण हत्या, जन्म के बाद भेद भाव, स्कूल - कॉलेज में छेड़ छाड़, मानसिक प्रताड़ना, एसिड अटैक, घरेलू हिंसा आदि विषयों को मृदुला सिंह, कुमारी नीलांजना, कृषिका गुप्ता, आकांक्षा राय, सौरभ, तमन्ना राठौर ने अपने अभिनय और ध्वनि प्रभाव द्वारा प्रस्तुत किया. मंच का संचालन निरूपमकांति पाल ने किया.. संध्या सत्र में सांस्कृतिक आयोजन का उद्घाटन किया गया. आगोमनी वार्ता प्राप्ति कर्मकार, ओरिमीता, एवं मिताली चटर्जी ने प्रस्तुत किया.

# पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था पर हमला नाटक घर घर सड़क सड़क

**केलांचल टाइम्स. भागलपुर**

परिधि द्वारा दुर्गाबाड़ी मसाकचक भागलपुर में नाटक और माइम की प्रस्तुति की गई। महिला मुद्दों पर केंद्रित नाटक और माइम का निर्माण परिधि महिला मंडली द्वारा किया गया। नाटक "घर-घर सड़क-सड़क " में महिलाओं के साथ जन्म से मृत्यु तक होने वाले भेदभाव को दिखलाया गया। संवादः- सीधी तन कर चलती क्यों.? जोर जोर से हंसती क्यों? के माध्यम से पुरुषवादी मानसिकता को उजागर किया गया। नाटक में एक व्यक्ति कहता है- तुम पायलट हो या डॉक्टर, पर हो तो एक औरत ही.."। समाज ने औरत को कमजोर, अबला और निःसहाय बनाकर रखा है, समाज में कोई सशक्त नारी बर्दाश्त नहीं की जाती। दुनियां की सबसे बड़ी विषमता की जननी है पितृसत्ता। महिलाएं घर सड़क , कार्यालय सभी जगह भेद भाव और हिंसा की शिकार होती हैं ये नाटक का केंद्रीय विषय है। केवल महिलाओं के सशक्तिकरण से व्यवस्था नहीं बदलेगी , लडकों को संवेदित करना जरूरी है। घर घर,सड़क सड़क नाटक में औरतों के इर्द-गिर्द होने वाली घटनाओं और पुरुषवादी सोच को छोटी-छोटी कहानियों के रूप में सजाया है। सुश्री संगीता द्वारा रचित व निर्देशित यह नाटक छोटी-छोटी कहानियों का कोलाज है जिसे सुषमा, लाडली राज,स्मिता कुमारी,श्रृति सुरभि और कृतिका मंजरी ने अपने अभिनय से जीवंत किया। स्त्री हो या पुरुष सभी किरदार महिलाओं ने ही निभाया। दूसरी प्रस्तुति माइम "-देवी " की हुई। देवी -जो जननी है, देवी -जो भाई की कलाई पर रक्षा सूत्र बांधती है, देवी -जो अर्धांगिनी है, देवी - जो बेटी बन खुशियाँ बिखेरती है... पर समाज इन देवियों के साथ क्या करता है..? इन्हें मूर्ति की तरह चुप रहने कहता है। अब औरत पूजा नहीं बराबरी चाहती है। सामूहिक रचना और राहुल के निर्देशन में तैयार माइम महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा पर केंद्रित था। गर्भ में ही भ्रूण हत्या, जन्म के बाद भेद भाव, स्कूल - कॉलेज में छेड़ छाड़, मानसिक प्रताड़ना, एसिड अटैक, घरेलू हिंसा आदि विषयों को मृदुला सिंह, कुमारी नीलांजना, कृषिका गुप्ता, आकांक्षा राय, सौरभ, तमन्ना राठौर ने अपने अभिनय और ध्वनि प्रभाव द्वारा प्रस्तुत किया गया। माइम की प्रस्तुति देखकर कुछ समय का सन्नाटा पसर गया। इसअवसर पर दुर्गाबाड़ी पंडाल पूरी तरह भरा हुआ था।

❖ Date: **16 October 2024**

Time : 2 pm- 5 pm

Location**: कलाकेन्द्र, भागलपुर**

Name of Event/Activity **:** प्रो. जी एन साईंबाबा की श्रद्धांजलि सभा

Type of Activity : श्रद्धांजलि सभा

Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

दिनांक 16 अक्टूबर 2024 को कला केंद्र भागलपुर में संयुक्त रूप से प्रो. जी एन साईंबाबा के निधन पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता प्रो. विलक्षण बौद्ध ने किया।

अध्यक्षीय वार्ता के दौरान प्रो. विलक्षण बौद्ध ने प्रो. जी एन साईंबाबा को महान क्रांतिकारी होने के साथ साथ मानवाधिकारों का रक्षक बताया। उन्होंने नागरिक अधिकारों के रक्षा को लोकतंत्र का सबसे बड़ा पैमाना बताते हुए कहा कि वर्तमान सरकार लोकतंत्र की गला घोंट रही हैं।

दैनिक भास्कर भागलपुर, गुरुवार, 17 अक्टूबर, 2024 | 5

जीएन साईं बाबा क्रांतिकारी के साथ मानवाधिकार रक्षक भी थे: विलक्षण

कला केंद्र में प्रो. साईंबाबा के श्रद्धांजलि सभा में विचार रखते वक्ता व अन्य।

सिटी रिपोर्टर | भागलपुर

बिहार फुल आंबेडकर युवा मंच की ओर से बुधवार को कला केंद्र में प्रो. जीएन साईंबाबा के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता कर रहे प्रो. विलक्षण बौद्ध ने प्रो. जीएन साईंबाबा को महान क्रांतिकारी होने के साथ-साथ मानवाधिकारों का रक्षक भी बताया। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मनोज कुमार ने कहा कि नागरिक अधिकारों पर काम करने वालों पर जिस प्रकार जुल्म किया जा रहा है यह अंग्रेजी सरकार से भी अधिक खतरनाक साबित हो रही है जिसको उखाड़ फेंकने के लिए महात्मा गांधी सहित लाखों राष्ट्रवादियों ने लड़ाई लड़ी थी। मंच के उपाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार गौतम ने कहा कि प्रो. साईं बाबा की समस्थानिक हत्या की गई है। इसके लिए सरकार के तीनों अंग कार्यपालिका विधायिका और न्यायपालिका जिम्मेदार है। ललन ने कहा कि प्रो. साईं बाबा दबे पिछड़े जनता की आवाज को मजबूती देने वाले लोगों की आज बहुत कमी खल रही है। मौके पर रामानंद पासवान, सार्थक भरत, उदय, राहुल, सोनम राव, अभिषेक आनंद, प्रवीण कुमार, राहुल, स्मिता व अन्य ने बातें रखीं।

श्रद्धांजलि सभा को संबोधित करते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति मनोज कुमार ने प्रो साईंबाबा पर जेल में दी गई यातनाओं को याद करते हुए कहा कि नागरिक अधिकारों पर काम करने वालों पर जिस प्रकार जुल्म किया जा रहा है यह अंग्रेजी सरकार से भी अधिक खतरनाक साबित हो रही है जिसको उखाड़ फेंकने के लिए महात्मा गांधी सहित लाखों राष्ट्रवादियों ने लड़ाई लड़ी थी। समाजकर्मी उदय ने प्रो साईंबाबा अपनी पर बात करते हुए बताया कि सत्ता का यह स्वरूप बहुत ही खतरनाक है हम जिस लोकतंत्र की रक्षा की बात करते है उसे धर्म संप्रदाय के नाम पर एक और तोड़ा जा रहा है वहीं दूसरी ओर कॉरपोरेट और पूंजीपतियों के आगे नतमस्तक किया जा रहा है। बिहार फुल अंबेडकर युवा मंच के उपाध्यक्ष वीरेंद्र कुमार गौतम ने कहा कि प्रो साईंबाबा की समस्थानिक हत्या की गई है की हत्या की गई है। जिसके लिए सरकार के तीनों अंग कार्यपालिका विधायिका और न्यायपालिका जिम्मेदार है। सामाजिक कार्यकर्ता ललन ने बताया कि प्रो साईंबाबा का जाना हमारे लिए इसलिए भी बहुत दुखदाई है क्योंकि दबे पिछड़े जनता की आवाज को मजबूती देने वाले लोगों की आज बहुत कमी खल रही है और ऐसे लोगों को सरकारी तंत्र के द्वारा कई प्रकार से प्रताड़ित की जा रही है। सामाजिक न्याय आंदोलन से जुड़े रामानंद पासवान ने प्रो साईंबाबा के निधन को बड़ी क्षति बताते हुए कहा कि जिस प्रकार विश्वविद्यालयों में दलित पिछड़े प्राध्यापकों व विचारकों पर नकेल कसे जाते है यह निंदनीय और शर्मनाक है। संचालन करते हुए सार्थक भरत ने बताया कि मानवाधिकारों का हनन जहां भी हुआ है वहां लोकतंत्र कमजोर होते गया है। वर्तमान समय में राजनीतिक पार्टियों अपने समर्थकों को जिस प्रकार हिंसक और संवेदनहीन बना रही है यह लोकतंत्र को भीडतंत्र बनाने की कवायत है जिसे रोकने की आवश्यकता है।

Theme: लोकतान्त्रिक विचारो को मजबूत करना

Total number of participants (in that activity) : 33

❖ Date: **28 October 2024**

Time: 4 pm -6 pm

Location: लाजपत पार्क , भागलपुर

Name of Event/Activity: **"अमन के दीप "**

Type of Activity : सांस्कृतिक कार्यक्रम

Brief Description: Highlights of the activity (Not more than 300 words)

28 अक्टूबर 2024 को पीस सेंटर परिधि की ओर से अमन के दीप कार्यक्रम के नाम से दिवाली मिलन का आयोजन लाजपत पार्क के समीप किया गया। कार्यक्रम कला केंद्र से सटे अहाते में हुआ। पीस सेंटर परिधि आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन उदय ने किया तथा धन्यवाद पीस सेंटर के संयोजक राहुल ने दिया। कार्यक्रम की शुरुआत "दीए दिवाली के जलाओ मिलके सब और मनाओ मिलके सारे ईद भी " से हुई इस अवसर पर डा वीणा यादव ने एक दूसरे को दीपावाली की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दिवाली अंधेरे के खिलाफ खड़े होने और अपना रास्ता आलोकित करने का मेसेज देता हुआ त्यौहार है। एक हाथ में गीता, एक हाथ में कुरान, तभी अपना देश महान" कहकर देश के तरक्की की कामना की। उदय ने कहा "अमन के दीप " हम लोगों का सालाना कार्यक्रम बन गया है। जब नफरतवादी शक्तियां अमन चैन छीनने के लिए लगातार प्रयासरत हैं तो हम सब भी इस अंधेरे के खिलाफ तनकर खड़े हैं। पीस सेंटर परिधि की ओर से कला केंद्र के बगल में लाजपत पार्क से सटे आज 28 अक्टूबर को अमन के दीप कार्यक्रम आयोजित हुआ। हिंदू मुस्लिम महिला पुरुष सभी ने इस कार्यक्रम में भाग लेकर एक दूसरे को दीपावली की बधाई और शुभकामनाएं दी।शुभकामनाएं देते हुए मेहमानों ने कहा कि भारत उत्सवों और त्यौहारों को देश है। प्रकाश पर्व प्रायः हर समुदायों में मनाया जाता है। दिवाली रौशनी की अहमियत स्थापित करता है और अंधेरे के खिलाफ लड़ने की प्रेरणा देता है। बहुलतावाद राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्य ही नहीं राष्ट्रीयता / राष्ट्रवाद का पर्याय भी है। तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व डीएसडब्ल्यू डॉ योगेंद्र ने कहा कि दुनिया का कोई भी देश एकाकी नहीं हो सकता हमें विभिन्न रूप, रंग, धर्म को आधार के साथ स्वीकार करना होगा। हमारा देश सांझी संस्कृति का देश है , बहुलतावाद राष्ट्रवाद का पर्यायवाची है। विभिन्न संस्कृतियों को अक्षुण्ण रखने और त्यौहारों को सेलिब्रेट करने का मतलब है राष्ट्रीयता को मजबूत करना। दुर्भाग्य से अवांछित तत्व राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों को खंडित कर राष्ट्रवाद रटते हैं। लगभग दुनियां के सभी मुल्कों और समुदायों के बीच रौशनी का पर्व भिन्न भिन्न नामों से मनाया जाता है। इस त्यौहार से जुड़ा हुआ काली पूजा लक्ष्मी पूजा और गोवर्धन पूजा है। अमन और शांति के बिना लक्ष्मी नहीं आती ऐसा मिथ है। जिस तरह हिंदू मान्यताओं में दिवाली से जुड़ी कुछ आख्यान हैं वैसे ही दूसरे संप्रदायों में भी है। इस अवसर पर श्रीमती छाया पांडे ने कहा कि सच्चाई ये है कि दीपावली संक्रमण काल में मनाया जाता है। वर्षा की विदाई और ठंड के आगमन का यह मिलन काल है। दिवाली के आते आते आग सुहाना लगने लगता है। दीपक जलाने का सही अर्थ है अपने अंदर दीप जलायें। अप्प दीपो भवः। दिवाली अमन

'दिवाली अंधेरे के खिलाफ खड़े होने का त्योहार'

सिटीरिपोर्टर | भागलपुर

पीस सेंटर परिधि की ओर से सोमवार को लाजपत पार्क के समीप अमन के दीप कार्यक्रम के तहत दिवाली मिलन समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में शामिल सभी लोगों ने मिलकर दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरुआत की। पूर्व मेयर डॉ. वीणा यादव ने दीपावाली की बधाई देते हुए कहा कि दिवाली अंधेरे के खिलाफ खड़े होने और अपना रास्ता अलौकिक करने का मैसेज देने का त्योहार है। एक हाथ में गीता, एक हाथ में कुरान, तभी अपना देश महान कहकर देश के तरक्की की कामना की। वीणा यादव ने सभी लोगों से भाईचारे से दीपावली का त्योहार मनाने की अपील की। टीएमबीयू के पूर्व डीएसडब्ल्यू डॉ. योगेंद्र ने कहा कि हमें विभिन्न रूप, रंग, धर्म को आधार के साथ स्वीकार करना होगा। हमारा देश सांझी संस्कृति का देश है, बहुलतावाद राष्ट्रवाद का पर्यायवाची है। अमन और शांति के बिना लक्ष्मी नहीं आती। जिस तरह हिंदू मान्यताओं में दिवाली से जुड़ी कुछ व्याख्यान है वैसे ही दूसरे साप्रदायों में भी है।

रंगोली बनाकर उसपर दीप जलाते सामाजिक कार्यकर्ता व अन्य।

शांति सौहार्द और सुख समृद्धि का संदेश देने वाला मौका है इसीलिए इस अवसर पर हम मिठाइयां बांटते हैं। इस अवसर पर विभिन्न समुदाय के लोगों ने एक दूसरे को शुभकामनाएं दी। मौके पर हिंदू मुस्लिम, स्त्री-पुरुष सभी ने मिलकर अमन के दीप जलाए और मिठाइयां भी बांटी।

Theme: साझी संस्कृति

Rationale: देश की साझी संस्कृति के प्रति समझ और सौहार्द बढ़ाना |

Total number of participants (in that activity) : 100

शहर 30s

सोमवार को लाजपत पार्क के पास पीस सेंटर भागलपुर द्वारा दीपावली पर्व को लेकर आयोजित अमन के दीप कार्यक्रम में दीपक जलाते सामाजिक संगठन के लोग।

## 'हमारा देश सांझी संस्कृति का देश है'

भागलपुर। पीस सेंटर परिधि की ओर से अमन के दीप कार्यक्रम का आयोजन सोमवार को लाजपत पार्क के समीप किया गया। इस दौरान दीवाली मिलन समारोह का भी आयोजन किया गया। मौके पर टीएमबीयू के पूर्व डीएसडब्ल्यू डॉ. योगेंद्र ने कहा कि हमारा देश सांझी संस्कृति का देश है, बहुलतावाद राष्ट्रवाद का पर्यायवाची है। इस मौके उदय, राहुल, डॉ. वीणा यादव, डॉ. हबीब मुर्शिद खान, डॉ. अलका, तकी अहमद जावेद, डॉ. उपेंद्र साह, मृदुला सिंह, पूनम श्रीवास्तव, मो. बाकिर हुसैन, शिवानी मिश्रा, अर्जुन शर्मा आदि मौजूद थे।

भागलपुर, सोनभद्र संवाददाता

## अमन के दीप कार्यक्रम का हुआ आयोजन

पीस सेंटर परिधि की ओर से अमन के दीप कार्यक्रम के नाम से दिवाली मिलन का आयोजन लाजपत पार्क के समीप किया गया। कार्यक्रम कला केंद्र से सटे अहाते में हुआ। पीस सेंटर परिधि आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन उदय ने किया तथा धन्यवाद पीस सेंटर के संयोजक राहुल ने दिया। कार्यक्रम की शुरूआत "दीए दिवाली के जलाओ मिलके सब और मनाओ मिलके सारे ईद भी " से हुई इस अवसर पर डा वीणा यादव ने एक दूसरे को दीपावाली की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि दिवाली अंधेरे के खिलाफ खड़े होने और अपना रास्ता आलोकित करने का मेसेज देता हुआ त्यौहार है। एक हाथ में गीता, एक हाथ में कुरान, तभी अपना देश महान" कहकर देश के तरक्की की कामना की। तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व डीएसडब्ल्यू डॉ योगेंद्र ने कहा कि दुनिया का कोई भी देश एकाकी नहीं हो सकता हमें विभिन्न रूप, रंग, धर्म को आधार के साथ स्वीकार करना होगा। हमारा देश सांझी संस्कृति का देश है , बहुलतावाद राष्ट्रवाद का पर्यायवाची है। विभिन्न संस्कृतियों को अक्षुण्ण रखने और त्यौहारों को सेलिब्रेट करने का मतलब है राष्ट्रीयता को मजबूत करना। दुर्भाग्य से

अवांछित तत्व राष्ट्रीय आंदोलन के मूल्यों को खंडित कर राष्ट्रवाद रटते हैं। लगभग दुनियां के सभी मुल्कों और समुदायों के बीच रौशनी का पर्व भिन्न भिन्न नामों से मनाया जाता है। इस त्यौहार से जुड़ा हुआ काली पूजा लक्ष्मी पूजा और गोवर्धन पूजा है। अमन और शांति के बिना लक्ष्मी नहीं आती ऐसा मिथ है। जिस तरह हिंदू मान्यताओं में दिवाली से जुड़ी कुछ आख्यान हैं वैसे ही दूसरे संप्रदायों में भी है। इस अवसर पर श्रीमती छाया पांडेय ने कहा कि सच्चाई ये है कि दीपावली संक्रमण काल में मनाया जाता है। वर्षा की विदाई और ठंड के आगमन का यह मिलन काल है। दिवाली के आते आते आग सुहाना लगने लगता है। दीपक जलाने का सही अर्थ है अपने अंदर दीप जलायें। दिवाली अमन शांति सौहार्द और सुख समृद्धि का संदेश देने वाला मौका है। अवसर पर विभिन्न समुदाय के लोगों ने दूसरे को शुभकामनाएं दी। मौके पर मुस्लिम, स्त्री-पुरुष सभी ने मिलकर अमन दीप जलाए और मिठाइयां भी बांटी। अवसर पर डा वीणा यादव, छाया पांडे, हबीब मुर्शिद खान, डा योगेंद्र, डा अल तकी अहमद जावेद, डा उपेंद्र शाह, मृ सिंह, पूनम श्रीवास्तव, मो बाकिर हुसैन, अ शर्मा, मिंटू कलाकार, चित्रकार विजय स उज्जवल कुमार घोष, संगीता, रंगकर्मी रा झा, सुषमा, फनी चंद्र, इप्टा के संजीव कु दीपू, शिवानी मिश्रा, मो साहीन अनीस, को श्री, मनोज कुमार, पुष्पा देवी, रूपा रानी आदि मौजद थे।

राजीव कुमार सिंह (राहुल)
संयोजक:पीस सेंटर, भागलपुर